L2/17-309

Special rendering of Rya in Devanagari

Srinidhi A
srinidhi.pinkpetals24@gmail.com

Sridatta A
sridatta.jamadagni@gmail.com

September 2, 2017

1 Introduction

This document provides the model to represent special rendering of *rya* in many North Indian languages using Devanagari. It was briefly discussed in the 1.3 section of our document L2/17-098. Based on the L2/17-255 Recommendations to UTC #152 July-August 2017, a new and separate document is presented here.

2 Description

In Devanagari if a vowel less consonant *ra* precedes a consonant, then it takes the superscript form commonly known as *repha*.

र + ् + य → र्य

ra *virama* *ya*

However in languages like Braj Bhasha, Awadhi, Rajasthani, Gujarati etc ligature of *ya* and *ra* is preferred over *repha* in Devanagari. This is exemplified in Braj Bhasha reader of Rupert Snell.

> (c) Conjuncts of *r* with *y*, common in perf. ptc. from verb roots in *-r*, are written not with a superscript *repha* but with a modified य, appearing in the printed text as e.g. करयौ.

A similar situation occurs in Bengali where *rya* can be written using both *repha* and *ya-phalaa*. This is documented in Bengali section as given below.

> An ambiguous situation is encountered when the combination of *ra* + *hasant* + *ya* is encountered:
>
> র + ্ + য → র্য or র‍্য
>
> To resolve the ambiguity with this combination, the Unicode Standard adopts the convention of placing the character U+200D ZERO WIDTH JOINER immediately after the *ra* to obtain the *ya-phalaa*. The *repha* form is rendered when no ZWJ is present, as shown in the following example:
>
> র + ্ + য → র্য
>
> 09B0 09CD 09AF
>
> র + ZWJ + ্ + য → র‍্য
>
> 09B0 200D 09CD 09AF
>
> When the first character of the cluster is not a *ra*, the *ya-phalaa* is the normal rendering of a *ya*, and a ZWJ is not necessary but can be present. Such a convention would make it possible, for example, for input methods to consistently associate *ya-phalaa* with the sequence <ZWJ, *hasant*, *ya*>.

It is to be noted that the *tatsama* words may retain *repha* as in Sanskrit like सूर्य, कार्य. In the text given below *sūrya* is written as सूर्य and *māryo* is written as मार‍्यो in Braj Bhasha.

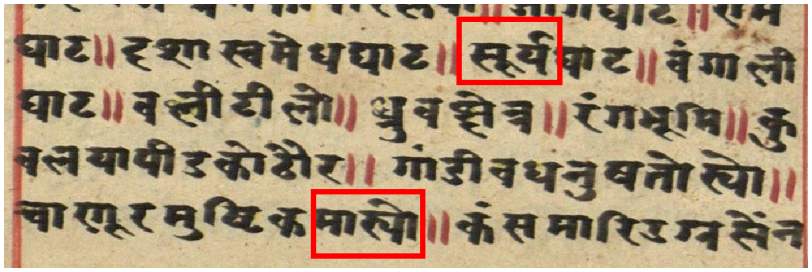

3 Rendering

In order to represent both forms in plaintext the following sequences are proposed. As mentioned above similar models are adopted in Bengali and Kannada to prevent the display of *repha*.

Default way of rendering *rya* with *repha*.

र + ◌् + य → र्य

To prevent display of a *repha*, U+200D zero width joiner is placed after the *ra*, but preceding the *virama*:

र + ZWJ + ◌् + य → र‍्य

0930 200D 094D 092F

In Marathi language the form eyelash RA ऱ् is used in place of *repha* in certain contexts. Though the representation of eye lash *ra* is already adopted in Unicode Standard. Here it is mentioned as it is closely related to forms of *ra* in consonant conjuncts. Here ZWJ is placed after *virama*.

र + ◌् + ZWJ + य → र्‍य

It is requested to mention this special rendering of र‍्य in Devanagari section of Core Specification.

4 Attestations

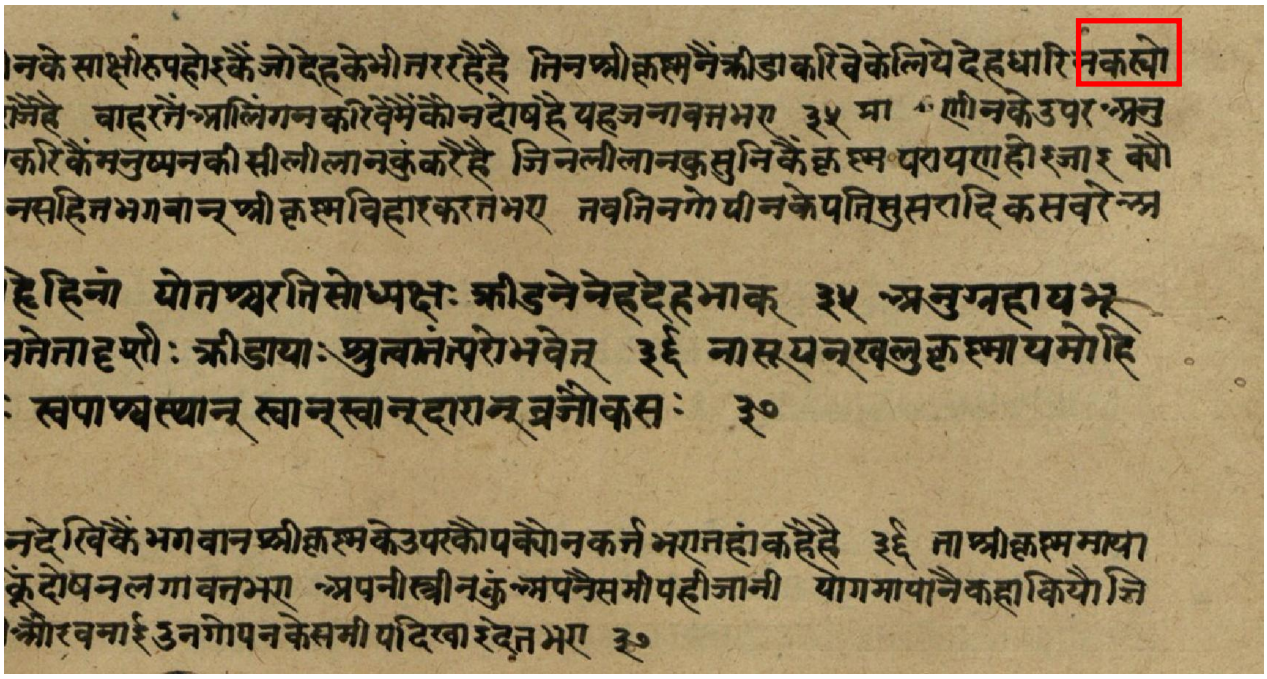

Figure 1. *Rāsapañcādhyāyī* -A Braj Bhasha manuscript.

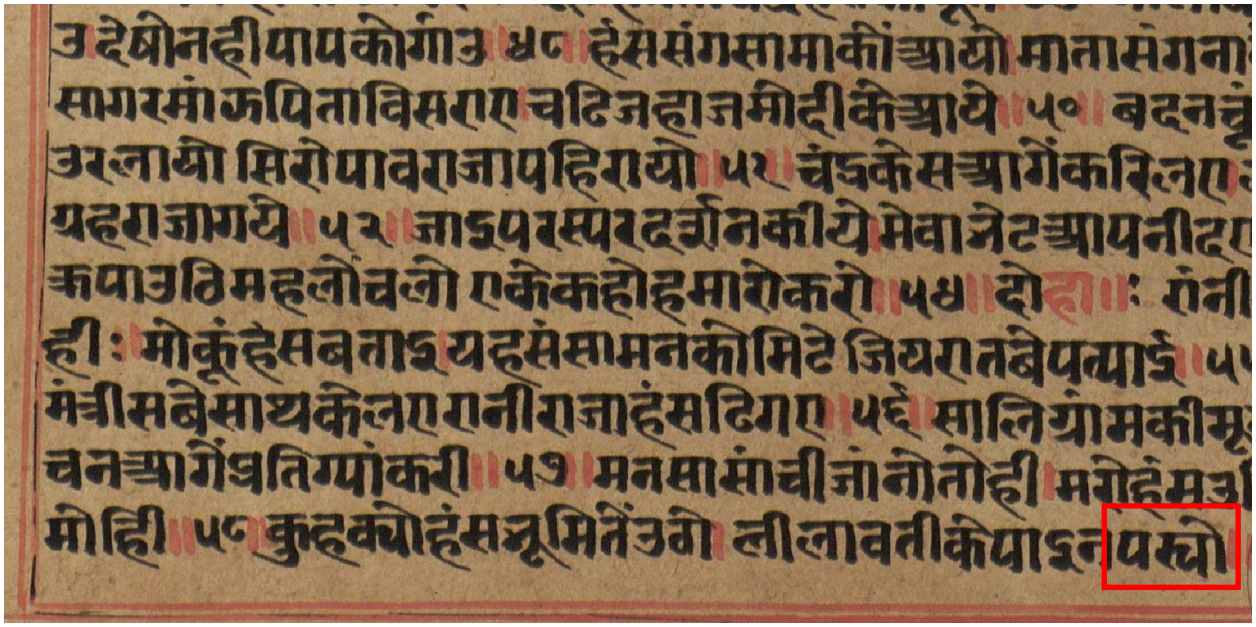

Figure 2. Use of स्य in a manuscript.

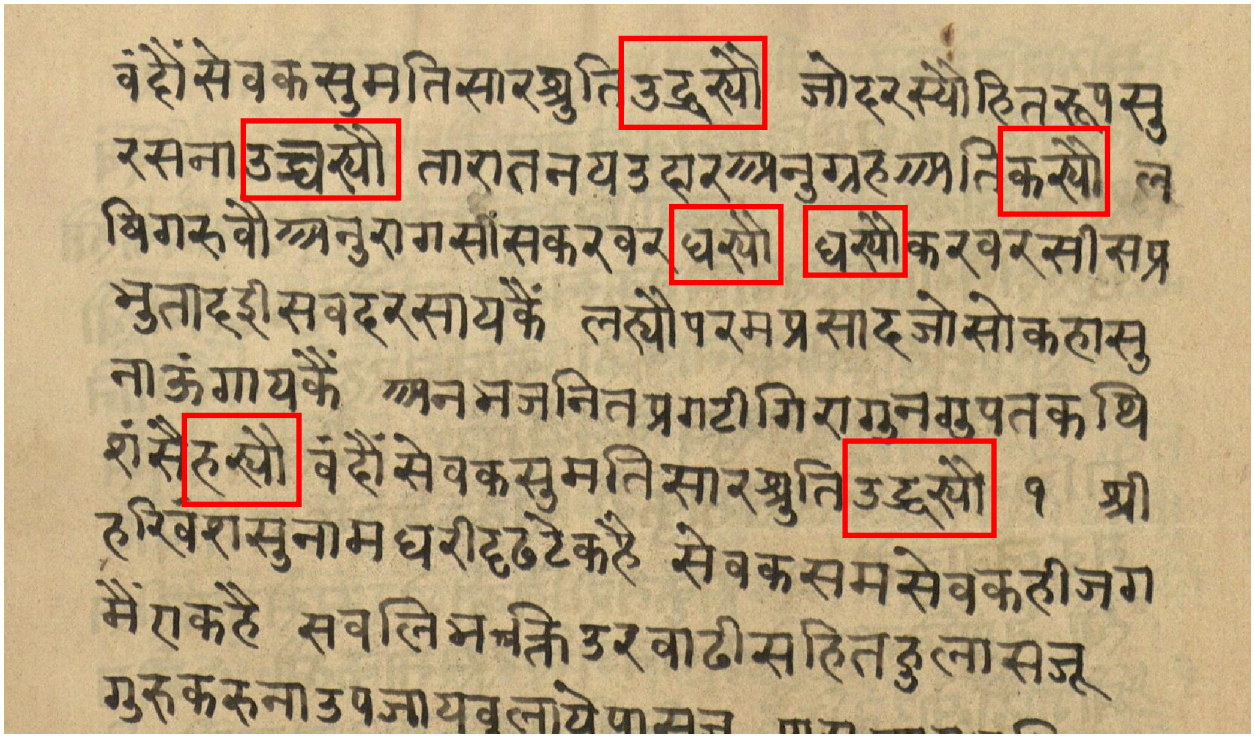

Figure 3. A manuscript named *Sevaka Abhinandana Saṅgraha.*

सब तजि भजिऐ नंदकुमार ।
और भजे तैं काम सरै नहिं, मिटै न भव जंजार ॥
जिहिं जिहिं जोनि जन्म धारयौ बहु जोरयौ अघ कौ भार ।
तिहिं काटन कौं समरथ हरि कौ तीछन नाम कुठार ॥
बेद पुरान भागवत गीता, सब कौ यह मत सार ।
भव समुद्र हरि पद नौका बिनु, कोउ न उतारै पार ॥
यह जिय जानि इहीं छिन भजि दिन बीते जात असार ।
सूर पाइ यह समौ लाहु लहि, दुर्लभ फिरि संसार ॥ २ ॥

Figure 4. *Sūr sāgar* written in Braj Bhasha (from Snell, 1991).

१२ ॥ राजनीति ॥

जग में होत हंसाइ चित्त में चैन न पावै।
खान पान सनमान रागरंग मन हि न आवै॥
कहि गिरधर कबिराय दुःख कछु टरत न टारै।
खटकत है जिय मांहिं कियौ जो बिना बिचारै॥

कह्यौ है पचायौ अन्न पंडित पुत्र पतिव्रता स्त्री सुसेवित राजा बिचार करि कहिवौ अरु करिवौ इन तें बिगार कब हू न उपजै। यह सुनि एक परेवा बोल्यौ अहो या डोकरा की बातैं आपदा में कहां लौं बिचारैं। ऐसें संदेह करियै तौ भोजन करनौं हू न बनै क्योंकि अन्न पानी में हू संदेह है। ऐसौ बिचार कर्यौ करैं तौ सुख सों जीवन हू न होय। कह्यौ है कि तृषावंत असंतोषी क्रोधी सदासंदेही जो और के भाग की आस करै अति दयावंत ये छहौं सदा दुखी रहैं। इतनी कहि वह परेवा चांवर चुगन उतर्यौ। वाके साथ सब उतरे। तब चित्रग्रीव नें बिचार्यौ कि इनकी लार जो होय सो होय पर साथ छोड़नौं उचित नाहीं। कह्यौ है मनुष अनेक शास्त्र पढ़ै औरन कौं उपदेस देइ पर लोभ आय घेरै तब बुद्धि न चलै। आगै विनके साथ चित्रग्रीव हू उतर्यौ। अरु जब वे पखेरू जाल में आये तब वा नें जाल की जेवरी खैंची सब बझे। तद जाके कहे उतरे हे वाकी निंदा करनि लागे। ऐसें और हू ठौर कह्यौ है कि सभा में सब तें आगै होय काम करै जौ संवरै तौ सब कौं फल समान होय। औ

Figure 5. A book named *Rājanīti* written in Braj Bhasha (from Lal, 1854).

स्वयं व्याकरण के नियमानुसार उनके रूपों का निर्माण कर उपयोग करने को स्वतंत्र हैं। कुछ प्रचलित क्रियाओं के साथ विभिन्न रूप दिये गये हैं। कृदन्तों, सहायक क्रियाओं आदि का समावेश उनमें किया गया है। मूल क्रिया एवं उसका सकर्मक रूप, यदि कोई हो तो, एवं भूतकालिक कृदन्त विशेषण मूल स्थान पर दिये गये हैं। एक उदाहरण इस संबंध में पर्याप्त होगा–

करणौ, करबौ–क्रि०स०—**कार्य को संपादित करना।**
करणहार, हारौ (हारी), **करणियौ**—वि०।
करवाणौ. करवाबौ, करवावणौ, करवावबौ।
कराणौ, कराबौ, करावणौ, करावबौ—प्रे०रू०।
करिओड़ौ, करियोड़ौ, करचोड़ौ—भू०का०कृ०।
करीजणौ, करीजबौ—कर्म वा०।

इनमें सकर्मक रूप एवं भूतकालिक कृदन्त को इस प्रकार मूल संबंधित क्रिया के साथ दिये जाने के अतिरिक्त उन्हें अलग से भी अपने क्रमिक स्थान पर प्रस्तुत किया गया है। संबंधित क्रिया के साथ भूतकालिक कृदन्त के तीनों रूपों का उल्लेख है, यथा– **करिओड़ौ, करियोड़ौ, करचोड़ौ**; किन्तु अलग से क्रमशः दिये जाने पर उनका केवल **करियोड़ौ** रूप ही दिया गया है। शेष दो रूप संबंधित क्रिया के साथ ही दे देना है तो व्यवस्था इसके विपरीत होगी एवं व्याकरण के खाने में क्रि०स०अ० लिखा गया है। भूतकालिक कृदन्त विशेषण के अतिरिक्त अन्य कृदन्तीय रूप मूल क्रिया के साथ क्रिया रूपों में नहीं दिये गये हैं। इस प्रस्तावना के अध्ययन से पाठक स्वयं उनका रूप-निर्माण कर प्रयोग कर सकते हैं।

संज्ञा एवं विशेषण शब्दों के साथ कुछ के क्रिया प्रयोग भी दिये गये हैं जिससे पाठकों को उनके साथ प्रयुक्त होने वाली क्रियाओं अथवा सहायक क्रियाओं का ज्ञान हो जायगा।

क्रिया के इस प्रकरण के समाप्त होने से पहले सहायक क्रियाओं, द्वैत क्रिया-पदों, संयुक्त क्रिया-पदों आदि का उल्लेख करना विषयान्तर न होगा।

सहायक क्रियाओं की रचना प्रमुखतः संस्कृत धातु **भू** (प्राचीन राजस्थानी **होवउँ**, आधुनिक राजस्थानी **होणौ**) और **अस** (प्राचीन राजस्थानी **अछवउँ**) से हुई है। निषेधवाचक रूप **नथी** ही अस धातु से बना है। सामान्य वर्तमानकाल में प्रायः **होवै** का (प्राचीन राजस्थानी में **हुइ** तथा काव्यगत रूप **होइ, होय** का) प्रयोग होता है जो अपभ्रंश के **होइ**, प्रा० **हुवइ**[1] सं० **भवति** से निःसृत हुआ है। आधुनिक राजस्थानी में **होवै** के रूप भेद **हुवइ** एवं **व्है** भी प्रचलित है। तैस्सितोरी के मतानुसार ये दोनों रूप **व** श्रुति के समावेश से बने हैं।[2]

Figure 6. Use of र्य in a Rajasthani dictionary (from Lalas, 1962).

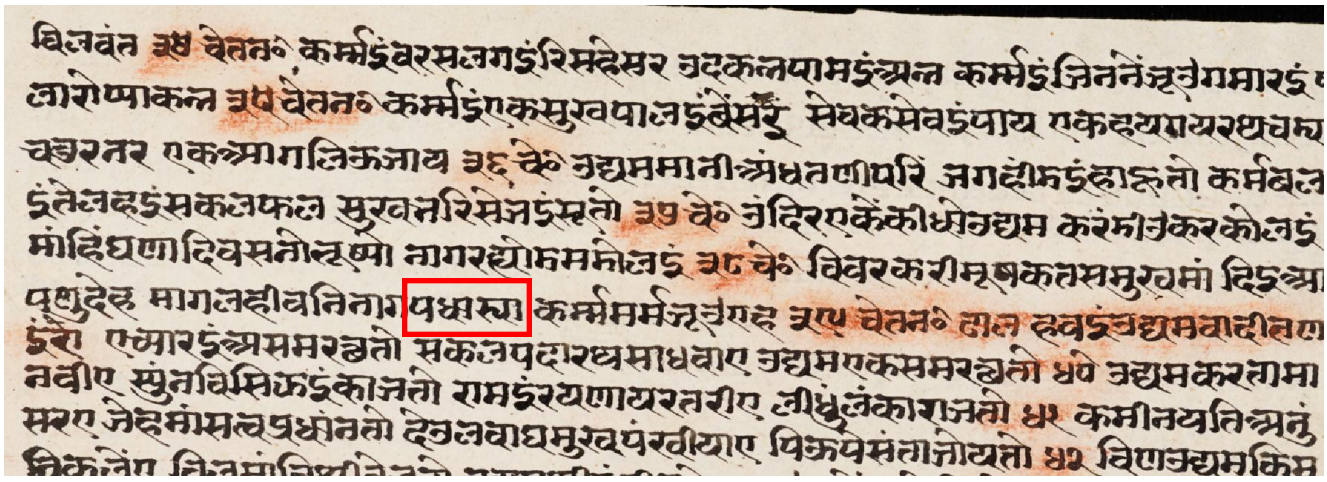

Figure 7. *Pāṃcabolakāraṇastavana*- a Gujarati language manuscript.

MS Add.1266.7 of Cambridge Digital Library.[1]

[1] https://cudl.lib.cam.ac.uk/view/MS-ADD-01266-00007/1

5 References

Lal, Lallu, and Fitzedward Hall. *Rája-nítí: a collection of Hindu apologues, in the Braj Bháshá language: with a preface, notes, and supplemental glossary*. Presbyterian Mission Press, 1854.

Snell, Rupert. *The Hindi classical tradition: a Braj Bhāṣā reader*. No. 2. Psychology Press, 1991.

Lalas, Sitaram. राजस्थानी सबद कोस [=*Rajasthāni sabada kosa*]. Rajasthani Shodh Sansthan, Jodhpur. 1962.